

भोजली
छ.ग. की मित्रता का पर्व

सत्येन्द्र कुमार[1], मनीराम[2]

[1] सहायक प्रध्यापक

[2] समाजशास्त्र छात्र

प्रस्तावना

छत्तीसगढ़ लोककला में लोकनृत्य सम्पूर्ण छ.ग. के जनजीवन की सुन्दर झांकी है। समस्त सामाजिक, धार्मिक व विविध अवसरों पर छ.ग. वासियो द्वारा अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करते है। जैसे कि एक पर्व भोजली है जिसका शाब्दिक अर्थ भो+जली अर्थात भो अर्थात भूमि तथा जली अर्थात जल होता है। यह पर्व छत्तीसगढ़ वासियों के लिए मित्रता की पर्व के रूप में जाना जाता है। मान्यता है कि भोजली का अच्छा होना अच्छे फसल का समृद्धि भी माना जाता है।

भोजली तिहार की लोक मान्यताएः पृथ्वीराज चौहान जब राजा थे इसी समय आल्हा और उदल भी रहे, आल्हा और उदल की मित्रता चन्द्रवंशीय परमान राजा की बेटी चन्द्रवली के संग मित्रता रहती है। चन्द्रवली एक दिन अपनी माँ को बोलती है कि मुझे आवन में झूला झुलना है उसके माँ बोलती है नहीं बेटी अभी नहीं झूलना है। चन्द्रवली गुस्सा हो गई ये सब बात की जानकारी उदल के स्वप्न के माध्यम से मिलता है तब उदल साधू के वेश बनाकर चन्द्रवली के यहां पहुंच जाता है और उदल चन्द्रवली को यह आश्वासन देता है कि मैं आपको सावन का झूला झुलाऊंगा। इसी बात का इंतजार राजा पृथ्वीराज चौहान को रहता है। क्योंकि ये अपने पुत्र तम्हर का विवाह चन्द्रवली के साथ चाहता था। इसी मौके में चन्द्रवली की अपहरण करना चाहता था जब राजा पृथ्वीराज चौहान उसकी अपहरण करना चाह रहा था तब युद्व हुआ। उदल आल्हा लाखन ये सभी ने उस राजा का रक्षा किया। उस समय चन्द्रवली ने भोजली तिहार मनाने की इच्छा जाहिर किया। इसी दिन से यह पर्व मित्रता के लिए मनाया जाता है।

भोजली पर्व का यह विधियां है कि खाद, मिट्टी कुम्हार के घर से ही लाया जाता है। इसके बाद महतो के घर से चुरकी और टुकनी (टोकरी) लाई जाती है। महतो गांव या समाज का सबसे बुढ़ा या सम्मानित व्यक्ति होते है। जो कि गोंड़ समुदाय से होते है जब खाद मिट्टी बोझानी घर में आ जाता है तब टोकरी में खाद मिट्टी को मिलाकर उसमें गेहू के दाने का भिगोकर बोया जाता है। पांच दिनों में ही गेहूं से पौधे (भोजली) निकलकर बड़े हो जाते है। सात दिन तक विधि विधान के साथ पूजा अर्चना कर खूब सेवा की जाती है जो कि इस प्रकार की गीत गाकर सेवा की जाती है।

भइंस के रेंगे म धरस पर जइहे
भोजली के रेंगना म नर्मदा बोही जइहे
अखरा म आखर चाऊंर गडुहा म दूधे
खड़े हे कौशिल्या रानी मांगत हे पूते आ हो देवी गंगा।

देवी गंगा देवी गंगा लहर ल तुरंगा हो
हमर भोजली दाई ये के भिजे आठो अंगा
आ हो देवी गंगा ....
आई गईस पुरा बोहाइस गइस कचरा
हमर भोजली दाई ये सोन सोन के अचरा
आ हो देवी गंगा ....
आई गईस पुरा बोहाइस गइस मंलगी
हम भोजली दाई बर सोन सोन के कलगी
आ हो देवी गंगा ....
चुनी डारने धानये पछुनी डारेन भूसा
लइके लइके हवन भोजली झन होहू गुस्सा
आ हो देवी गंगा ....
सोने के कलशा म गंगा जल पानी
हमर भोजली दाई के पइया पंखारे
आ हो देवी गंगा ....
सोने के दियना कपुर गये बाती
हमर भोजली दाई के आरती उतारी
आ हो देवी गंगा ....
पानी बिना मछरी पवन बीना धाने
सेवा बिना भोजली के तरसे पराने
आ हो देवी गंगा ....
माड़ी भर जोधरी पूरस कोसियारे
जल्दी–जल्दी बाड़हा भोजली होऊ होसीयारे
आ हो देवी गंगा ....
दूध मांगने पूत मागेन, मागेन आशिशे
जुग जुग जियां भोजली लाख बरिशे
आ हो देवी गंगा ....

यह कि पर्व ग्रामीण में सावन माह में नागपंचमी के दिन से इस पर्व की शुरूआत हो जाती है। रक्षाबंधन के अगले दिन नदी या तालाबों में इसका विसर्जन कर दिया जाता है जो कि इस प्रकार के गीत गाकर विसर्जन करते है।

कान में भोजली खोंचकर मितानी (दोस्ती) के अटूट बंधन में बंधने का पर्व है। छत्तीसगढ़ के सांस्कृतिक वैभव के प्रतीक भोजली पर्व की अपनी महत्ता है। पूरे छत्तीसगढ़ में बड़े धूमधाम से यह पर्व मनाया जाता है। भोजली विसर्जन के बाद उसके ऊपरी हिस्से को बचाकर रख लिया जाता है। जिसे लोग एक दूसरे के कानों में खोंचकर भोजली गियां, मितान, सखी, सखा, महाप्रसाद, दान पान बदलते है।